BAOU Education for All
NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4
|| चैतन्य ||
CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

आदिवासी :गामीत जाति के लोकगीत

डॉ॰ अनिल ए.पी॰ गामीत
(आसिस्टेंट प्रोफेसर)
तुलनात्मक साहित्य विभाग,
दक्षिण गुजरात विश्वविधालय सूरत

सारांश : लोक साहित्य की अनेक विधाएं हैं जिसमें लोकगीत विधा सर्वाधिक प्राचीन काव्य विधा है। लोकगीत मानव जीवन में व्याप्त घटनाओं स्थितियों से उत्पन्न आंतरिक भावनाओं की लयात्मक, रागात्मक उदगीर्णता, लोकगीतों में प्राप्त होती है। लोकगीत मानवीय हृदय की आंतरिक नैसर्गिक अभिव्यक्ति है। जिसके अंतर्गत भाव, भाषा-बोली, सूर, लय, ताल, छंद की अनियमितता से मुक्त होकर स्वच्छंद रूप से नि:सृत होने लगते हैं। आदिवासी गामीत लोक ने जो गीत अपने मुख से गाए हैं वही गामीतो का लोक साहित्य है। वह लिपि बध्ध नहीं होता ईनकी मौखिक परंपरा है जो इस शोध पत्र में मैंने थोड़े कुछेक गीतों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

लोक साहित्य की एक प्राचीनतम व्याप्त एवं सबसे लोकप्रिय शैली लोकगीत हैं। प्रत्येक प्रदेशों प्रांतों की निजी धरोहर लोकगीत हैं। ग्राम्य प्रदेश की प्रत्येक गतिविधि तथा संवेदना के ताने बाने लोकगीत में समेटा हुआ नजर आता है। लोकगीत में मनुष्य जीवन शैली को एक विशिष्ट ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए कि पारस्परिक रीति-रिवाज, मान्यताएं, रहन-सहन, सांस्कृतिक मूल्यों

तथा तथ्यों को परखना पड़ता है। लोकगीत में मानव हृदय की भावना को अत्यंत उत्कृष्ट स्थिति में लयात्मक और रागात्मक आरोह- अवरोह में प्रस्तुत की जाती है। डॉ- विधा चौहान लिखती है कि मानव हृदय भाव का विलास अपने उत्कृष्ट स्थिति में लयात्मक आरोह-अवरोह में जब भाषा बंद होकर प्रवाहित होने लगा तो शब्द शास्त्रियो में उसे गीत कहा और इस गीत परंपरा की एक धारा जब अपने देशज बोलियों में (अपनी घरेलू भाषा) लोकवाणी को प्रभावित करने लगी तो उसे 'लोकगीत' के नाम से ज्ञापित किया गया।

उद्‌देश्य :-

- भारत की आत्मा धार्मिक सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना ।
- भारत के समग्र आदिवासियों को अपनी लोक संस्कृति और लोक साहित्य की रक्षा करने के लिए प्रेरित करना।
- प्रकृति के तत्वों की रक्षा करना पूजन करना।
- भारत के आदिवासी गामीत समाज की लोक संस्कृति, लोक साहित्य और लोकगीत से परिचित कराना।
- आदिवासी गामीत जाति के लोकगीतों को सुरक्षित रखना।
- आदिवासी गामीत जाति के सांस्कृतिक परिचय से आने वाले पाठकों, छात्रों, अनुसंधानकर्ता, संशोधकों को प्रोत्साहित करना।
- तकनीकी युग में गामीत समाज की भाषा-बोली और लोकगीतों की रक्षा करना।

आदिवासी गामीत समाज:-

समाज व्यक्ति से श्रेष्ठ हैं समाज कायदे कानून एवं रीति नीति पर अवलंबित होता है। निःसंदेह समाज और व्यक्ति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यक्ति जन्मत: स्वतंत्र होता है। बाद में समाज के अनेक नियमों में बंद जाता है, जुड़ जाता है। व्यक्ति सामाजिक मान्यता को प्राप्त करने के लिए मानव शिष्टाचारों एवं नैतिक आदर्शों का पालन करता है। डॉ॰ धर्मराज सिंह ने लिखा है - कि व्यक्ति की सामूहिक इकाई है समाज। व्यक्ति ने समाज में

प्रतिष्ठित मान्यताएं विधि, नीति-नियम, रीति-रिवाज, ज्ञान, साहित्य का बड़ा खजाना प्राप्त किया है। यह सांस्कृतिक मूल्य उनके जीवन यापन और जीवन शैली में उनके बर्तन व्यवहार में निरंतर प्रतिबिंबित होते हैं। यह उनकी अलग पहचान है। समाज में मनुष्य के जीवन को उन्नत एवं विशाल बनाने वाली व्यापक धारणा संस्कृति हैं। संस्कृति एक अत्यंत व्यापक और संकुल हैं। लेकिन प्रत्येक समाज में इसका विशिष्ट रूप पर प्रकट होता है।

पुनीत भारत भूमि पर अनेक आदिवासी जातियों में गामीत जाति समुदाय हैं। जिसको गामीतो, गामता, गामतडा, गामीत से भी पहचाना जाता है। गामीत जाती आदिवासी समुदाय में अपनी बोली, भाषा, रहन-सहन, परिवेश, कुटुंब व्यवस्था, नीति-नियमों, मूल्य, मान्यताएं, पारस्परिक जीवन शैली को अपनाते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

आदिवासी जातियों में मुख्य जाती भीलो की मानी जाती है। भील जाति में से गामीत जाति की उत्पत्ति हुई है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि - भील जाति की उत्पत्ति के बारे में प्रचलित कथा है की - महादेव जंगल की आदिवासी कन्या के प्रेम में थे उसी से कन्या का गर्भ ठहरता है और अनेक संतानों को जन्म देती है। इसमें एक रूपहिन और दुष्ट पुत्र ने महादेव के वाहन नंदी को काट दिया। इस पुत्रों को जाति से बाहर निकाल दिया गया। इसमें से जो प्रजा उत्पन्न हुई वह है भील प्रजा। भील और आर्य राजाओं के बीच यूध्ध का उल्लेख मिलता है। प्राचीन अनार्यो और भील आदिवासियों के संसर्ग में भील तथा अनेक जातियां उत्पन्न हुई है। इन जातियों में एक जाति गामीत है।

गामीत जाति मूल भील की ही उपजाती है ऐसा माना जाता है कि भील पहाड़ों में निवास करते थे। बाद में पहाड़ों को छोड़कर पहाड़ों के नीचे सपाट खुले मैदान में झोपड़ी बना कर रहने लगे। पहाड़ों से नीचे तक पर खुले मैदान में गांव बसाया। वहां पर रहने वाले लोग 'गामतल' हुए। बाद में 'गामीत' हो गया। ऐसा भी माना गया है कि राजाओं के समय में कहीं भील सरदारों को

गांव को संभालने की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। ये भील सरदार 'गांवीत' कहलाते। परंपरागत गांवीत या 'गामीत' कहलाने लगे।

गामीत जाति के लोकगीत :-

लोकगीत किसी भी समय संस्कार के अवसर पर गाए जाने वाला संस्कार गीत होता है। अंग्रेजी में उसे 'फोकटोल' भी कहा जाता है। इसका रचयिता अनाम होता है। यह लिखित रचनाएं नहीं होती। पीढ़ी-दर-पीढ़ी को हस्तांतरित होने वाली ये रचनाएं आदिवासी समाज की धरोहर हैं। सामूहिकता, चेतना, भावुकता गेयता इसकी विशेषता हैं। अशिक्षित अज्ञानी परिश्रम जीवी की यही भावाभिव्यक्ति है। आदिवासी अपना मनोभाव व्यक्त करने के लिए गीतों का सहारा लेता है।

लोकगीतों में देवी-देवता, पशु-पक्षी, नदी, पहाड़, जंगल का चित्रण होता है। आदिवासी स्त्रियां ऐसे गीत भावविभोर होकर गाती है। उसके साथ नृत्य भी करती है। कष्ट, दुख-दर्द भूलने के लिए मनोरंजन के लिए देवताओं को प्रसन्न शुभ-अशुभ प्रसंगो में ये गीत गाए जाते हैं।

आदिवासी गामीत समाज के कुछेक लोकगीतों का संकलन करके प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं।

प्रकृति के गीत :-

प्रकृति की गोद में बसने पलने वाली आदिवासी गामीत प्रजा नदी, जंगल, जमीन, पहाड़ों को चाहती है, रक्षा करती है।

गांव हिमाडे वोड

वोडे रवा जाहू वा

सोबीती मां लेखारी बेना

(गांव के बाहर सीमा पर बगदाद का बड़ा पेड़ है और आम का भी पेड़ है वहां हम खेलने जाएंगे बहना)

ऊंचो डोगा नीचो डोगा

कोलिए कोलिए चमकी घुंघरमाल

(ऊंचे नीचे पहाड़ों, पर्वतों के ऊपर, हरी भरी घास, फूल और लता भी झूल रही है वहां पर हम खेलने जाएंगे बहना।)

खेती-बाड़ी के गीत:-

हना गाडलअ घडावी दाउरा

रींगली लोलीहांरो टांकरा

हना पैडे घडावी दाउरा

रींगली लोलीहांरो टांकरा

(सोने की बेल गाड़ी बना दी गई है। बैलगाड़ी का पूरा सामान सोने का ही है अब मजा आएगा बैलगाड़ी को धूल मार्ग पर चलाने का।)

खेड़ूत पोहे खेड़ूत

आमा खेती आरे कहुअरा

खोदाली लाहूं पावडो लाहूं

राने आमा जाहूंरा

(हम किशान के पुत्र हैं। हम खेती साथ में करेंगे। हम खेत में खेती काम करने के लिए खुदाली, फावड़ा, हथिया, त्रिकम आदि साधन सामग्री लेकर जाएंगे।)

प्रेम-प्रणय के गीत:-

गामीत समाज में प्रेम-प्रणय के भी गीत प्रतिबिंबित होते हैं। प्रेमी और प्रेमिका का मिलन स्थान बगीचा है या फिर एकांत झाड़ी जंगल में मिलने का वादा होता है।

ता डोगाले डुंगरे रा बापानेरा
ता उबी रजे वा बेना
ता फूलाहा वाडी रा बापानेरा
ता उबी रजेवा बेना

(प्रेमी प्रेमिका फूलों की बॉडी में बगीचे में बातें करते दोनों एक हो जाए और विवाह कर ले अगर दोनों के माता-पिता ने हमें जुदा कर दिया तो हम भाग जाएंगे।)

चाल नींगी जाते वा
अंजना गोठारी जोड़ी
चाल नींगी जाते रा
अनिल गोठारा जोडा

(प्रेमी और प्रेमिका दोनों भाग निकल जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।)

शिकार के गीत:-

गामीत लोग शिकार के लिए एक कला का काम करते हैं। जो गौरव दिलाए ऐसा है। गामीत लोग जिन साधनों से शिकार करते हैं। उस साधनों के नाम रखकर शिकार के गीतों की रचना करते हैं।

हुंर....हुंर....होय...होय...हादलयो चाल्यो
चाला रा बायाहाय आपाबदा
ईलीमीली ने शिकार करा जाता
शिकार कईने मजा कअतारा
हुंर... हुंर. होय...होय हादलयो चाल्यो
कुतरो, तुंबडी, लाकडी लेयने
शिकार करा झाड़ीमाय जाता
हुंर... हुंर...होय..होय... हादलयो चाल्यो
चालारा बायाहाय तुंबडी लेयन झाडवे चडीने

शिकार करा झाड़ीमाय जाता

होअले फकडे ने डूंफे भेदी देजा

हुंर.... हुंर.....होय...होय..हादलयो चाल्यो

(इस गीत में गांव के श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए आदरणीय शब्द का प्रयोग किया जो समय संभाल कर शिकार करने जाने का निश्चय करते हैं। और पूरे गांव के युवाओं और श्रेष्ठो मिलझुल कर शिकार करने के लिए जाते हैं और साथ में उतारा गागरा (पानी के बर्तन) जंगल के ऊंचे पेड़ पर चढ़कर देखना की खरगोश, हिरण, पशु-पक्षी, परिंदे कहां बैठे हैं उसको देखना है।)

होली के गीत:-

होली के गीत पीढ़ी दर पीढ़ी पुरानी परंपरा से गामीत समाज में गाए जाते हैं। गामीत भाषा में होली के गीतों को 'ओलिए लोल' कहे जाते हैं। लोल शब्द मात्र होली के गीतों के लिए प्रयोग किया जाता है।

पर्यावरण परिवर्तन के गीत:-

खाखरा फूलें गोगारी बा पोडयें

बोटकाली इस्ती येय, बोटकाली इस्ती येय

बोटकाली खोलो दोओमाय पोडयो

गोवालियो टूंगतो येय

अगोरा गोवालिया टूंगतो रखे

(उपर्युक्त गीत में प्रकृति में परिवर्तन होते ही गामीत समाज में उत्साह और आनंद उजागर कराता गीत है। जिसमें कुंवारी कन्या सभी पेड़ों से गिरे हुए फूलों को वह अपने कपड़े के गोदी बनाकर उसमें फुल डालते हैं तो वह कपड़े की गोदी फूलों की वजह से नीचे लक जाती है। उसे देखकर ग्वाला चुपके-चुपके पीछे पड़ जाता है।)

अमदावादेमाय गाडे जोडी जाहुंवा

अमदावादेमाय लोल

अमदावादेमाय रे काय- काय लाहुंवा

अमदावादेमाय लोल

अमदावादेमाय आडलो वाटी लाहुंवा

अमदावादेमाय लोल

(इस गीत में होली का त्यौहार नजदीक आया है। उसके लिए खरीदी करने के लिए अहमदाबाद शहर जाने के लिए हम बेल गाड़ी में जाएंगे। वहां से नारियल, खजूर, कोपर, चने लेकर आएंगे।)

होलीबाई येनी रोगारी

गांवते गऊ होदे वा

होली बाई बा रीहाणी

बठीही आंबलीतोलेवा

बठी बठी बा पूसेहे

कथअ पटला गउ

होली बाई येनी रोगारी

(होलीबाई रूठ कर आई है और गांव के बाहर इमली का पेड़ है उसके नीचे बैठी है और गांव के मुखी और पटेल का घर ढूंढ रही है, पूछ रही है।)

होली बाई बा काय काय लेई येनीवा

लीमजी लोलारा राज ने

होलीबाई बा आडलो वाटी लेई येनीवा

लीमजी लोलारा राज ने

(इस गीत में होली बाई क्या क्या लेकर आती है ऐसा पूजा करने वाले पुजारी को गीत गाने वाली गीत के माध्यम से पूछती है और लीमजी पुजारी खुद ही उत्तर देते हैं कि होली बाई आडला, कोपर, चना, खजूर लेकर आयी हैं।)

विवाह के गीत:-

गामीत जाति के युवक युवती अपने जाति में विवाह कर सकते हैं। अपनी कुलदेवी या देवी देवताओं की पूजा अर्चना करके विवाह तय किया जाता है। युवती के विवाह के दिन गांव की स्त्रियां गीत गाती हैं।

नीली-पीली पीठी लागे आमे बायेल
चूलामानो राफडो लागे अनील बायाल

(नीली-पीली हल्दी हमारी बहन को लग रही है और चूल्हे की राख अनिल को लगाई जा रही है ऐसा भाव इस गीत में प्रस्तुत होता है।)

फूलाहा वाडी माय उबी रवा बेना
ऊंच नीच जोड़ा नाय सोबेवा बेना
अनिल बायो ऊंचों नाय शोबेवा बेना
ता सरखअ जोड़अ एरीलेवा बेना

(इस गीत में विवाह के अवसर पर स्त्रियां गीत गाती है कि फूलों के बगीचे में आप खड़ी हो जाना बहेना ऊंच और नीच की जोड़ी आपकी नहीं जमेगी अनिल भाई आपसे बहुत ऊंचे हैं आप अपने समान अपनी जोड़ी ढूंढ लेना यह भाव प्रस्तुत किया गया है।)

आगले बाअवै वोराडा मांडवो
पाहले बाअवै गुलाबा फूलें
रडेहे रखेवा बेना रडेहे रखेवा
आबोहो तुल याद यी वा
आयोहो तुल याद यी वा
बाहा तुल याद यी वा
बअई तुल याद यी वा
रडेहे रखेवा बेना रडेहे रखेवा

(स्त्रिया गीत गाती है कि घर के आंगन में विवाह का मंडप है घर के पीछे गुलाब का फूल है आप मत रो तुझे मां-पिताजी भाई बहन सब याद आएंगे लेकिन यह विवाह है किसी न किसी दिन नारी को विवाह करके अपना घर और कहीं बसाना होता है तो आप रो मत कन्या के विदाई के समय गाया जाता है।)

गामीत मरशियाएं:-

गामीत लोग स्वभाव से शांत, प्रेमी तथा भोले होते हैं। इसलिए वे लोग दयालु ज्यादा दिखाई देते हैं। इसी कारण दुख के प्रसंग में उनके चेहरे पर साफ दया का भाव देखने को मिलता है। मरशिया मृत्यु में गाए जाते हैं ।

टाकी देने केस नींगी गियो रा मां जोड़ा
आमी आए काय कऊरा मां जोड़ा
ओ... मां जोड़ा..ओ.. मां जोड़ा
टाकी देईने एखलो नींगी गियो रा मां जोड़ा
मान बी हादी लेजेरा मां जोड़ा

(इस गीत में पत्नी अपने पति के मृत्यु के समय रोती हैं। दुख-पीड़ा व्यक्त करती है कि मुझे अकेले छोड़कर कहां चले गये? अब मैं क्या करूंगी? कहां ढूढ़ूंगी? तुम मुझे बुला लो? किसी दिन रास्ते में मिल जाना, इस गीत में ऐसा भाव व्यक्त हुआ है।)

मां चिड़ी मां चिड़ी चिड़ी
आमी आय केस होदीही रा मां चिड़ी
तुल वाहनो मठो कअयो रा मां चिड़ी
ई गऊ हूनो लागी रा मां चिड़ी

(इस गीत में जब बेटे की मृत्यु हो जाती है मां रोती है की (चिड़ि याने की बेटा) तुम्हारे जैसा बेटा मैं अब कहां ढूंढने जाऊंगी। तेरा लालन-पालन करके तुझे बड़ा किया, तेरे बिना घर सूना सूना लगेगा मैं तुझे कहां ढूढ़ूंगी बेटा।)

इस प्रकार खेती गीत, प्रकृति के गीत, होली के गीत, विवाह के गीत, मरेशिया आदि गामीत लोकगीत सुनने को मिलते हैं। आदिवासी गामीत जाति में लोकगीत गुजरात के कोने-कोने में गूंजते हैं। आदिवासी गामीत विवाह परंपरा रीति-रिवाजों और प्रसंगों में, पूजा विधि विधान आदि में लोकगीत गाकर आनंद-उल्लास करके जीवन यापन करते हैं।